अंताक्षरी

कहानी माला– 39

शाप

– विजयदान देथा

शाप

□ विजयदान देथा

एक थी कीड़ी। वह अत्यधिक नितनेमी व धर्म परायण थी। अवास, उपवास, एकासने व व्रत रखती थी। सूरज पूजती, संध्या-वंदन करती कार्तिक स्नान करती और पीपल सींचती थी। एक बार चैत्र के महीने में उसने शीतला माता के अगते किये। अगतों में कभी सिर नहीं धोया। अगते उतरने पर वह सिर धोने के लिए तालाब पर गई। चिकनी मेट और दही से बाल धोये। चंदन की कंघी से बाल संवारे। वह निर्वसन होकर स्नान कर

रही थी, यह सोचकर कि इतने सवेरे कौन आयेगा। पर संयोग की बात कि एक प्यासा कौवा उसी तालाब पर पानी पीने आया। कौए को देखा तो कीड़ी लज्जा से दुहरी होती जैसे तैसे अपने वस्त्र लपेटने लगी। निर्लज्ज कौए को उसने गालियां निकाली। बहुत ही बुरा-भला कहा। आखिर कौए को भी गुस्सा आ गया। बोला—यह तेरे बाप का तालाब नहीं है। जो यहां नंगी होकर नहाये। ऐसी ही लाजवंती है तो अपना अलहदा तालाब खुदवाले। कीड़ी फिर भी गालियें निकालती बंद नहीं हुई। कौए के क्रोध की सीमा नहीं रही। कांव-कांव करते हुए बोला—लातों के देव बातों से थोड़े ही मानेंगें। इतना कहकर उसने कीड़ी पर चोंच

का भरपूर वार किया। कीड़ी का सिर फूट गया। धक-धक लोहू बहने लगा। मरती हुई कीड़ी ने कौए को श्राप दिया—'ओ रे क्रूर बेशर्म कौए तेरी आँख फूटे।' कहते ही कौए की आँख फूट गयी। उसी दिन से कौए काने होने लगे।

कौआ उड़ता उड़ता बबूल के एक वृक्ष पर जाकर बैठा। बबूल ने कौए की एक आँख फूटी देखी तो पूछा—'कौए भाई, कौए भाई कल तो शराब के प्यालों सी तेरी आँखें जगमगा रही थी, पर आज एक ही आँख कैसे?' एक ही आँख को दोनों ओर घुमाते हुए कौए ने कहा—'मुझे मरती कीड़ी ने सराप दिया कि काना कौआ और शूल भरा बबूल।' कहते ही बबूल में ठौड़ ठौड़ शूलें

उत्पन्न हो गई। जिधर नजर जाये उधर शूलें ही शूलें। उसी दिन से बबूल के शूलें होने लगी, उसके पहिले बबूल शूल रहित हुआ करते थे।

कौआ उड़ता उड़ता एक आम के वृक्ष पर जाकर बैठा। वहां एक कोयल मीठे सुर में कुहू-कुहू कर रही थी। पके हुए आमों के समान उसका पीला-जर्द रंग था, सोने से भी लुभावना। स्वर्णिम कोयल को कौए की एक आंख देखकर अचरज हुआ। पूछा—'कौए भाई, कौए भाई, कल तो केरी की फांक जैसी तेरी आँखे थी, आज एक ही आँख कैसे?' कौए ने पुतली को दोनों ओर घुमाते हुए कहा—'मरती कीड़ी ने मुझे सराप दिया कि कौआ

काना, शूल भरा बबूल और कोयल काली।' कहते ही कोयल कौए से भी अधिक काली हो गई। उस दिन से ही कोयलें काली होने लगी हैं, पहिले सोने के समान पीली व चमकीली हुआ करती थी।

वहां से उड़कर कौआ एक चंदन के वृक्ष पर जाकर बैठा। उस वृक्ष से कई साँप और अजगर लिपटे हुए थे। कौए के एक आँख देखी तो उन्हें बड़ा अचरज हुआ। कौए से पूछा–'कौए भाई, कौए भाई, कल तो मणियों जैसे तेरी दोनों आँखे चमक रही थी, आज तेरे एक ही आँख कैसे? कौए ने जवाब दिया–'मुझे मरती कीड़ी ने सराप दिया कि कौआ काना, शूलों भरा बबूल,

कोयल काली और निपग्गे साँप।' कहते ही साँपों के सभी पैर गिर पड़े। उस दिन से ही सभी साँप पेट के बल रेंगते हुए चलने लगे। पहिले उनके एक सौ आठ पांव हुआ करते थे।

वहां से उड़कर वह कौआ एक खजूर के वृक्ष पर जाकर बैठा। कौए की एक आँख देखकर उसे बड़ां आश्चर्य हुआ। उसने कौए से पूछा–कौए भाई, कौए भाई कल तो खारकों {छुहारे} के समान तेरी दोनों आँखे थी, आज तेरे एक ही आँख कैसे? बात क्या हुई? कौए ने कहा–'मुझे मरती कीड़ी ने सराप दिया कि कौआ काना, शूलों भरा बबूल, कोयल काली, निपग्गे साँप और लंबा खजूर।' इतना कहते ही खजूर ऊंचा ही ऊंचा बढ़ता

गया। पहिले खजूर इतने ठिगने होते थे कि बच्चों के भी हाथ पहुंच जाते, मीठे-मीठे खजूर वे बिना एड़ियों ऊँची किये तोड़ लिया करते थे। पर उस दिन के बाद से खजूर तो वापस ठिगने हुए ही नहीं।

उड़ता उड़ता वह कौआ एक हाथी के ऊपर जा बैठा। कौए को एक आँख देखकर उसे बड़ा अचंभा हुआ। उसने पूछा—'कौए भाई, कौए भाई, कल तो तेरे मोतियों जैसी बड़ी आँखे थी, पर आज तेरे एक ही आँख कैसे?' कौए ने कहा—'मुझे मरती हुई कीड़ी ने सराप दिया कि कौआ काना, शूलों भरा बबूल, कोयल काली, निपग्गे सांप, लम्बा खजूर और दंतल हाथी।' कहते ही

मूसल के समान हाथी के दाँत बाहर निकल गये। उस दिन से ही हाथियों के दाँत इतने लम्बे हुए। उनके खाने के दाँत और हैं और दिखाने के और।

उड़ता उड़ता वह कौआ एक पर्वत की चोटी पर जाकर बैठा। कौए की एक आँख देखकर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने कौए से पूछा—'कौए भाई, कौए भाई, कल तो चद्रंमा के टुकड़े जैसी तेरी दोनों आँखे दमक रही थी, आज तेरे एक ही आँख कैसे? कौए ने जवाब दिया—'मुझे मरती कीड़ी ने संराप दिया कि कौआ काना, शूलों भरा बबूल, कोयल काली, निपग्गे सांप, लम्बा खजूर, दंतल हाथी और निपंखा पर्वत।' कहते ही पर्वत की पांखें

झड़ गई। उस दिन के बाद ही पहाड़ निपट अविचल और स्थिर हुए। एक बाल भर भी खिसकना उनके लिए असंभव हो गया। पहिले पर्वतों के पंख हुआ करते थे और वे हजारों कोस स्वच्छंद उड़ा करते थे।

उड़ता उड़ता वह कौआ एक बड़े पत्थर पर जाकर बैठा। कौए की एक आँख देखकर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। पूछा—'कौए भाई, कौए भाई कल तो गलगचिये जैसी तेरी चमकती आँखें थी, आज तेरे एक ही आँख कैसे?' कौए ने कहा—'मुझे मरती कीड़ी ने सराप दिया कि कौआ काना, शूलों भरा बबूल, कोयल काला, निपग्गे सांप, लम्बा खजूर, दंतल हाथी, निपंखा पर्वत, और

निर्वाक पत्थर!' कहते ही पत्थर की जिव्हा नष्ट हो गई। उस दिन से ही सभी पत्थर मूक हो गये। पहिले मनुष्यों की तरह हरदम उड़ता बात-चीत किया करते थे।

अब जाकर कौए को प्यास लगी। वह उड़ता उड़ता एक समंदर पर पानी पीने गया। कौए के एक आँख देखकर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। पूछा—'कौए भाई कल तो सीपों जैसी तेरी दोनों आँखे थी, पर आज एक ही आँख कैसे, क्या हुआ? कौआ तो जवाब देने को आतुल ही था। कहने लगा—'मुझे मरती कीड़ी ने सराप दिया कि कौआ काना, शूलों भरा बबूल, कोयल काली, निपग्गे सांप, लम्बा खजूर, दंतल हाथी, निपंखा परवत, निर्वाक

पत्थर और खारा समंदर।' यह कहते ही समंदर का सारा पानी नितांत कड़ुवा हो गया, नमक से भी कहीं ज्यादा कड़ुवा। पहिले समंदर का पानी दूध के समान मीठा होता था। उस दिन के बाद से हमेशा के लिए खारा हो गया।

जिस प्रकार कीड़ी का सराप सभी को लगा, वैसा किसी के बैरी-दुश्मन को भी न लगे।

नसीहत

एक था बूरा मुर्गा और एक थी भैंस। दोनों में थी गहरी दोस्ती। साथ ही खेलते, साथ ही कूदते-फांदते और साथ ही जंगल में

चरने को जाते। भैंस घास चरती, मुर्गा कीड़े मकोड़े और लटें चुगता, खेतों में बिखरे हुए दाने चुगता। संध्या को मुरगा भैंस की पीठ पर बैठकर घर आ जाता। रास्ते में हंसी-ठिठोली करते मस्ताई करते।

एक दिन मरगे को एक मजाक सूझी। रास्ते में एक लंबा-चौड़ा गड्ढा आया। मुरगे ने कहा- भैंस मौसी, आओ अपन इस गड्ढे को लांघे। भैंस थी भोली-भाली। मुरगे की बात मान गई। मुरगे ने कहा- पहिले मैं कूदूं।

मुरगे ने कुछ समय तक तो जानकर यों ही दिखावे के लिए आगा-पीछा किया। ऐसा अभिनय किया उसने कि जैसे उस गड्ढे

को लांघना उसके लिए कड़ी मुश्किल बात हो। आखिर डरते डरते उसने जोर से एक बांग दी व कलंगी ऊंची करके फर्राटे से गड्ढा लांघ गया। कहने लगा- मैं एक छोटे-सा पंछी होकर कूद गया, फिर तुम्हारी लिए तो यह बहुत ही आसान बात है।

फिर भेंस की बारी आई। वह दो तीन बार रड़कारे करने के बाद कूदी, पर गड्ढे के उस किनारे तक नहीं पहुंची। धड़ाम से अन्दर गिर पड़ी। मुरगा काफी देर तक खिल-खिल हंसता रहा।

भेंस बेचारी ठौड़-ठौड़ से छिल गई। घुटने छिल गये, मुंह छिल गया। पृट्ठों की काफी चमड़ी उतर गई। बड़ी मुश्किल से

बाहर निकल पाइ। उस दिन से भेंस के मन में बदला लेने की भावना सुलग उठी। थोड़े दिनों के पश्चात् उसने मुरगे से कहा—'आओ अपन बीटा-बीटी खेल खेलें। तू मुझ पर सात बींट करना और मैं तुझ पर केवल एक ही बीट करूंगी।' कहते ही मुरगा भेंस की बात मान गया। उसने भेंस पर बैठकर सात बीटें की। सात की बजाय हजार करे तो भी भेंस को उन बीटों का क्या भार?

फिर आई भेंस की बारी। भेंस ने थचाक मुरगे पर बड़ा सारा पोटा कर डाला। मुरगा उस पोटे के नीचे दब गया। बहुत फड़फड़ाहट की तो भी वह बाहर नहीं निकल सका। भेंस काफी

समय तक डग डग हंसती रही। मुरगे ने लज्जित होकर कहा—बुरी करी ए तूने तो मेरी भोली-भाली भेंस।

भेंस ने जवाब दिया—तुने ही यह सीख सिखाई मुझको। भेंस तो उसके बाद वहां खड़ी ही नहीं रही। रड़कती हुई वहां से दौड़ गई। मुरगा वैसा ही पोटे के नीचे दबा रहा। अब करे तो क्या करें! इतने में उसी रास्ते एक राजा निकला। वह अकेला ही शिकार चढ़ा था। मुरगे ने राजा को देखकर कहा—राजाजी सिकार चढ़घा, कूकड़लौ नीं भावै कांई! अचानक यह आवाज सुनकर राजा चौंका। इधर-उधर देखा, कहीं कुछ भी नजर नहीं आया। मुरगा दूसरी बार फिर बोला—राजा जी सिकार चढ़घा,

कूकड़लौ नीं भावै कांई!

इस बार राजा को पता चल गया। पोटे में बदबे हुए मुरगे की कलंगी देखी। झटपट घोड़े से नीचे उतरे। मुरगे को बाहर निकाला। मन में सोचा कि आज तो शकुन बढ़िया हुए। रास्ते में ही अच्छा शिकार हाथ लग गया। गोबर में लथपथ मुरगे की पांखें उतारने लगे तब मुरगे ने कहा—अैलौ-मैलौ भावै राजा, धुप्पोड़ौ नीं कांई!

राजा ने उसको पानी से ठीक धोया। और धोने के बाद फिर उसकी पांखे उतारने लगा, तब मुरगे ने कहा—आलौ-गीलौ भावै राजा, सूख्योड़ौ नीं भावै कांई! यह सुनते ही राजा ने उसे धूप

में सूखने के लिए छोड़ दिया। पास खड़ा राजा उसके सूखने की प्रतिक्षा करने लगा कि मुरगा अब सूखे, अब सूखे। लेकिन मुरगा तो सूखते ही फुर्र करता उड़ गया। उड़ते उड़ते ही कहने लगा—राजा ने सिकार भावै, पण कूकड़लौ नीं मरणी चावै।

राजा मुंह लटकाये उड़ते मुरगे की तरफ देखता रहा। मुरगा उड़ता उड़ता भेस से पहिले ही घर गया। फलसे बैठकर जोर से बांग दी। भेंस के पास आने पर बोला—भेंस मौसी सलाम!

कलंगी के वारने लेते हुए भेंस ने आशिष दी—जीते रहो, सुख से रहो। मित्र के साथ अब कभी बुरी मजाक न करना। दोनों में वापस मेल हो गया। फिर किसी ने एक-दूसरे के साथ बेजा हरकत नहीं की।

यह तो रास्ता बुरा

एक बार सोते हुए एक बनिये पर से चूहा निकल गया तो वह जोर से चिल्लाकर रोने लगा। उसका इस प्रकार अप्रत्याशित रोना सुनकर सभी घरवाले व अड़ौस-पड़ौस के व्यक्ति दौड़कर उसके पास आये। पूछा—बात क्या हुई? भले आदमी कुछ बताओ तो पता चले, केवल जोर जोर से रोये जा रहे हो?

बनिये ने रोते रोते ही कहा—मेरे सीने पर से अभी अभी एक चूहा निकल गया!

बात सुनते ही सभी हंस पड़े। कहा—'अरे, तो इनमें रोने

की क्या बात? एक नाकुछ चूहे से डर ग ये तुम? ऐसे तो बच्चा भी नहीं रोता। चार-पांच बच्चों के पिता हुए हो, इस प्रकार रोते हुए तुम्हे लज्जा नहीं आती।' तब बनिये ने कहा—मैं कोई चूहे के डर से नहीं रोया! एक की बजाय सौ चूहे निकल जांय तो मैं परवाह नहीं करता। किन्तु यह तो रास्ता ही बुरा है। आज चूहे ने मार्ग बनाया तो कल इधर से सांप निकलेंगे? मैं तो इस बुरे मार्ग की भावी आशंका से भयभीत हुआ हूं? यदि आज सहज ही यह रास्ता बन गया तो कल सांपो को इस रास्ते चलते कौन मना करेगा।

आपके जवाब के इन्तजार में-
शिवसिंह नयाल
'अलारिप्पु' बी-6/62, पहली मंज़िल, सफदरजंग इन्क्लेव,
नई दिल्ली-११००२९. दूरभाष : 6109327

ज्योति लेज़र टाइपसेटिंग
दिल्ली-११००९२